स्मारिका
अमर शहीद धन सिंह कोतवाल
1857 की जनक्रांति के जनक अमर शहीद धन सिंह कोतवाल
तिथिः पंचमी, सम्वत् 2075 (3 जुलाई 2018)
स्थल : थाना सदर बाजार, जनपद मेरठ
मेरठ पुलिस परिवार द्वारा सादर समर्पित

थाना सदर बाजार
जनपद मेरठ
सदर बाजार

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

अमर शहीद धनसिंह कोतवाल की इस स्मारिका का उद्देश्य 1857 की क्रान्ति में पुलिस की भूमिका और धनसिंह कोतवाल का पराक्रम, निडरता देश के प्रति समर्पण और वर्दी के स्वाभिमान के इस अप्रतिम उदाहरण को जनसामान्य तक पहुँचाना है। विशेष रूप से हम पुलिस कर्मियों को ही स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में पुलिस कर्मियों की भूमिका के बारे में जो जानकारी नहीं है, उसे पुलिस कर्मियों तक पहुँचाना है।

वर्ष 2007 में जब मैं मेरठ में पुलिस अधीक्षक, नगर के पद पर तैनात था, तब किसी ने मुझे न तो क्रान्ति दिवस के बारे में बताया और न ही किसी ने शहीद धनसिंह कोतवाल का नाम उद्धरित किया। 02 मई, 2018 को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक का पदभार ग्रहण करने के बाद 10 मई को क्रान्ति दिवस का कार्यक्रम बड़े धूम-धाम से चौधरी चरण सिंह यूनीवर्सिटी के सभागार में बनाया गया, जिसमें काफी संख्या में लोगों ने भाग लिया। इसमें राजकीय दायित्वों का निर्वहन करने वाले वरिष्ठ व कनिष्ठ अधिकारियो, मा० सांसद, मा० विधयकगण एवं अन्य जनप्रतिनिधियों तथा जनता के व्यक्तियों ने भाग लिया। वहीं मुझे किसी ने यह बताया कि सिविल लाइन क्षेत्र में पुलिस विभाग के धनसिंह कोतवाल की प्रतिमा लगी हुई। है तथा उनका एक चित्र थाना सदर बाजार में भी लगा हुआ है। कौतूहलवश मैं स्वयं सहकर्मियों से जानकारी प्राप्त कर, उस प्रतिमा पर माल्यार्पण करने गया तथा सदर बाजा कोतवाली के बरामदे में लगे हुए, छायाचित्र का माल्यार्पण किया।

माल्यार्पण करने के बाद मैंने पुनः जब धनसिंह कोतवाल की प्रतिमा पर लगे शिलालेख को पढ़ा तो मुझे आत्मग्लानि हुई कि एक खाकी वर्दीधारी, जिन्होंने ऐसी ब्रिटिश हुकुमत के विरूद्ध जनता के सहयोग से विद्रोह किया था, जिसकी हुकुमत में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था, उसके बारे में मुझे कोई जानकारी तक नहीं हैं। शहीद धनसिंह कोतवाल की मूर्ति के पास एक विचार गोष्ठी चल रही थी, जिसमें एक गम्भीर से दिखने वाले सज्जन धनसिंह कोतवाल के बारे में प्रमाणिक साक्ष्यों के साथ अपना व्याख्यान दे रहे थे। मैं मुत्रमुग्ध होकर उनका व्याख्यान सुनता रहा। व्याख्यान समाप्त होने के बाद मैं स्वयं उठकर उनके पास गया और उनसे उनका परिचय पूछा तो उन्होंने बताया कि उनका नाम डॉ० सुशील भाटी है और सम्प्रति राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाजपुर जनपद उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड) में इतिहास विभाग के सहायक प्रोफेसर हैं। मैंने उसी दिन उन्हें अपने आवास पर आमंत्रित किया और उनसे धन सिंह कोतवाल के बारे में जानकारी प्राप्त कर यह पाया कि इतिहास के पन्नों पर अमिट स्याही छोड़ने वाले पुलिस परिवार के ही एक ऐसे निर्भीक व निडर योद्धा की जानकारी से बहुत से लोग वंचित रह गये हैं। उसी शाम मैंने अपने वरिष्ठ अधिकारियों से अनुमति लेकर यह घोषणा की, कि धनसिंह कोतवाल जिस थाने में कोतवाल थे, उसी थाना प्रांगण में उनकी एक प्रतिमा व एक शिलालेख अधिष्ठापित कर उनका सम्मान किया जाएगा। अगले दिन समाचार पत्रों में यह खबर भी प्रकाशित हुई कि धनसिंह कोतवाल की प्रतिमा थाना सदर बाजार के प्रांगण में लगायी जाएगी। खबर प्रकाशित होने पर मेरठ के प्रबुद्ध नागरिकों, पूर्व सैनिकों और जिम्मेदार व्यक्तियों ने फोन कर इस सम्बन्ध में अपनी सहमति भी व्यक्त की।

इस स्मारिका के प्रकाशन में डॉ० सुशील भाटी, जिन्होंने ऐतिहासिक तथ्यों के साथ धनसिंह कोतवाल के 1857 की गदर में दिये गये योगदान का जिक्र किया है, श्री अशोक चौधरी, जिन्होंने आजादी के बाद से अब तक 1857 की गदर के समय धनसिंह कोतवाल के नेतृत्व में हुई जनक्रान्ति के सम्बन्ध में किंवदन्तियों व जनश्रुतियों के आधार पर अपना लेख प्रकाशित किया है तथा धन सिंह कोतवाल शोध संस्थान नामक संस्था के चेयरमैन श्री तस्वीर सिंह चपराना, जो धनसिंह कोतवाल के वंशज हैं, कि ओर से भी

इस सम्बन्ध में धनसिंह कोतवाल की वंशावली तथा उनके योगदान का वर्णन अपने लेख में किया है, मैं उक्त तीनों महानुभावों का हृदय से आभारी हूँ कि इन्होंने पुलिस के इस साहसी, निडर एवं निर्भीक कोतवाल के बारे में अति महत्वपूर्ण जानकारी अपने लेख के माध्यम से उपलब्ध करायी हैं।

मैं आभार व्यक्त करता हूँ अपने अपर पुलिस महानिदेशक मेरठ जोन श्री प्रशान्त कुमार जी तथा पुलिस महानिरीक्षक मेरठ परिक्षेत्र श्री राम कुमार जी का, जिन्होंने शहीद धनसिंह कोतवाल के स्मारक को थाना सदर बाजार परिसर में स्थापित करने तथा उनके बारे में उपलब्ध जानकारी का स्मारिका के माध्यम से प्रकाशन कराने में कदम–कदम पर मेरा मनोबल बढ़ाया तथा इसे सफल बनाने में अपना अमूल्य सुझाव दिया।

अन्त में, मैं आदरणीय पुलिस महानिदेशक महोदय श्री ओ०पी०सिंह का मेरठ पुलिस परिवार की ओर से हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने मेरठ आकर स्वतंत्रता के इस अमर सेनानी के स्मारक का अनावरण थाना सदर बाजार परिसर में किये जाने की सहमति प्रदान की। आपकी गरिमामयी उपस्थिति में यह अवसर भी चिरकाल तक याद किया जाता रहेगा।
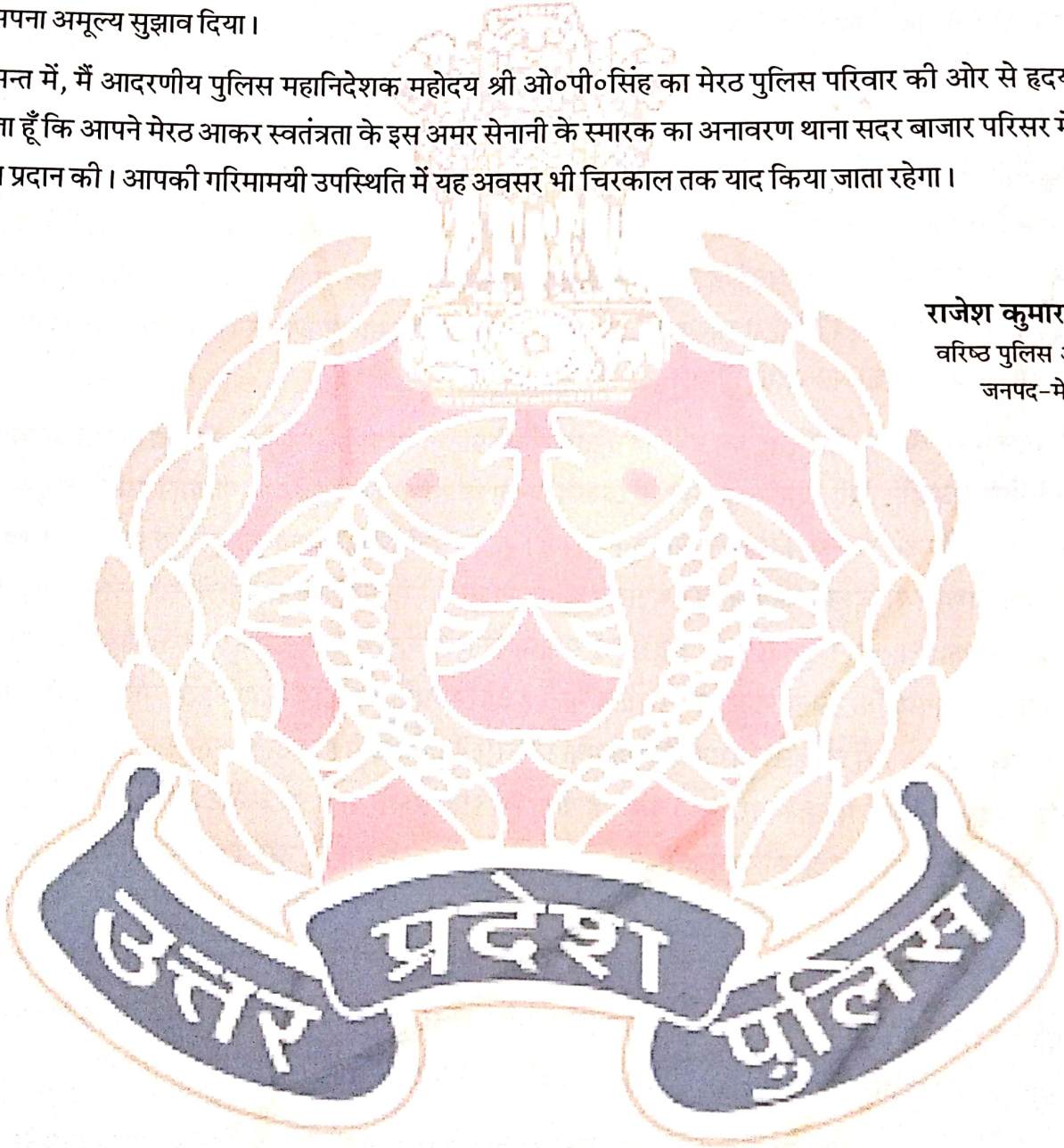
राजेश कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक,
जनपद–मेरठ।

प्रशान्त कुमार
आई०पी०एस०

अपर पुलिस महानिदेशक, मेरठ जोन, मेरठ।
Addi Director Genl. Of Police
Meerut Zone, Meerut.
Tel.: 0121-2463664, 2763733 Fax: 0121-2763247
दिनांक जुलाई, 2018

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि मेरठ के शहीद कोतवाल धन सिंह की प्रतिमा का अनावरण एवं उनकी याद में स्मारिका का प्रशासन किया जा रहा है।

वर्ष 1857 की जनक्रान्ति में पुलिस की भूमिका एवं सहभागिता का दुर्लभ उदाहरण शहीद धन सिंह कोतवाल का योगदान अनुकरणीय है। तद्समय मेरठ सदर कोतवाली में शहीद धन सिंह द्वारा कोतवाल रहते हुए क्रान्तिकारी भीड एवं कई गाँवों के सामान्य लोगों को एकत्र कर क्रान्ति का मुखर आइ्वान करते हुए सक्रिय नेतृत्व प्रदान कर अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह किया था।

स्मारिका के प्रकाशन हेतु मेरी ओर हार्दिक शुभकामनायें।

(प्रशान्त कुमार)
अपर पुलिस महानिदेशक,
मेरठ जोन, मेरठ

राम कुमार
आई०पी०एस०
RAM KUMAR
I.P.S.

पुलिस महानिरीक्षक, मेरठ परिक्षेत्र, मेरठ।
Insp. Genl. Of Police, Meerut Range Meerut
निकट सर्किट हाउस, सिविल लाइन, मेरठ-250003
Near Circuit House, Civil Line, Meerut-250003
Ph.: 0121-2666866, CUG-9454400214
digrmrt@up.nic.in
दिनांक जुलाई, 01-2018

संदेश

भारत की पुलिस के गौरवमयी इतिहास के अमर नायक श्री धन सिंह गुर्जर के स्मरण में यह स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। यह अवश्य ही उ० प्र० पुलिस के गौरवमयी इतिहास में एक मील का पत्थर साबित होगी।

भारत की पुलिस के गौरवमय इतिहास में श्री धन सिंह कोतवाल का नाम अंग्रेजों के विरूद्ध क्राान्ति का कदम उठाने वालों में प्रमुखता से लिया जाता है अमर शहीद कोतवाल श्री धन सिंह गुर्जर द्वारा 10 मई 1857 को अपने वफादार पुलिस कर्मियों के साथ तत्समय की ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध एक विद्रोह का कदम उठाते हुए अपनी भारतीयता का परिचय दिया था। इनके नेतृत्व में जेल तोड़कर 836 भारतीय कैदियों को छुडाकर जेल में आग लगा दी गयी थी। छुड़ाये गये कैदी भी क्रानित में शामिल हो गये थे। इनके नेतृत्व में कैन्ट एवं सदर बाजार क्षेत्र में अंग्रेजों से सम्बन्धित प्रतीकों तथा उनसे सम्बन्धित सम्पत्ति को नष्ट कर दिया गया। इनके कार्य के लिए अंग्रेजों द्वारा इन्हें गिरफ्तार कर मेरठ के एक चौराहे पर फासी से लटका दिया गया था।

उ० प्र० पुलिस का यह सौभाग्य है कि कोतवाल श्री धन सिंह गुर्जर जैसे अमर शहीद, शूरवीर द्वारा इस क्रानित की शुरूआत की गयी। मेरी ओर से इस क्रानितकारी महापुरुष के बलिदान को मेरे हृदय की गहराइयों से शत-शत नमन है।

भवदीय
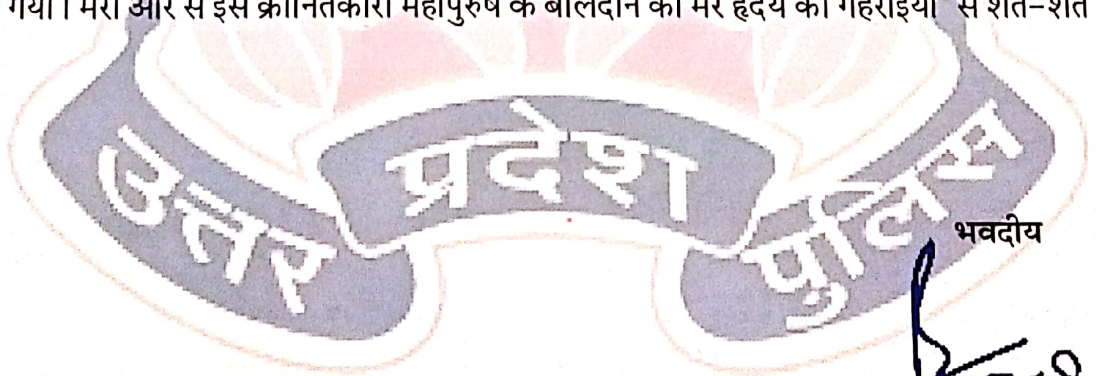
(राम कुमार)

1857 के क्रांतिनायक शहीद धनसिंह कोतवाल का सामान्य जीवन परिचय

तस्वीर सिंह चपराना, चेयरमैन, शहीद धनसिंह कोतवाल शोध संसथान

1. कोतवाल धनसिंह का जन्म चपराना गोत्र के गुर्जर परिवार में, गाँव पाँचली खुर्द, जिला मेरठ, उ०प्र० में हुआ था। उनके पिता गाँव के मुखिया श्री सालगराम तथा माता श्रीमति मनभरी थी।

2. कोतवाल धनसिंह बचपन से ही स्वाभिमानी, बुद्धिमान तथा तेजस्वी थे। उनका भारी भरकम शरीर, गौरा रंग सुडोल चेहरा, बड़ी-बड़ी मूछें, उन्नत ललाट, बड़े-बड़े कान, चमकीली आँखें तथा भारी आवाज थी। वे अत्यनत सुन्दर तथा रोबदार वाले व्यक्ति थे।

3. 10 मई 1857 को अंग्रेजों के खिलाफ विश्व प्रसिद्ध क्रान्ति की शुरूआत कोतवाल धनसिंह के नेतृत्व में मेरठ से हुई। क्रान्ति के समय धनसिंह गुर्जर मेरठ सदर में कोतवाल थें। वे कुशल प्रशासक थे। देशभक्ति और राष्ट्रवाद उनमें कूट-कूट कर भरा था।

4. धनसिंह कोतवाल देशव्यापी क्रान्ति के प्रसार के लिए अयोध्या से मेरठ साधू के सम्पर्क में थे। वास्तव में अयोध्या से आये साधू, बहसूमा-परीक्षतगए् के राव कदम सिंह एवम् धनसिंह कोतवाल ने ब्रिटिश सरकार के विरोध और सम्भावित संघर्ष को देखते हुए पाँचली खुर्द गाँव को केन्द्र बनाया था। धनसिंह कोतवाल अंग्रेजों से भारत को मुक्त कराने की देशव्यापी और क्षेत्रीय योजना का महत्वपूर्ण अंग बन चुके थे। उन्होंने क्रांति की योजना का मेरठ की पुलिस और आस-पास के गाँवों में प्रसार कर विस्तारित किया तथा सभी का समर्थन प्राप्त कर मेरठ में क्रान्ति का नेतृत्व प्रदान किया।

5. कोतवाल धनसिंह गुर्जर के नेतृत्व में मेरठ की पुलिस बागी हो चुकी है इसकी सूचना मिलते ही मेरठ की शहरी जनता और आस-पास के गाँव विशेषकर पाँचली खुर्द, घाट, नंगला, अफजलपुर पावटी, रामपुर, रामपुर पावटी, लखवाया, पठानपुरा, शोभापुर, खडौली, लिसाडी, गुमी, नूरनगर चुडियाला, डीलना और गगोल आदि गाँव के लगभग 10-15 हजार लोग सदर कोतवाली पँहुच गये और क्रांतिकारी घटनाओं को बढ़-चढ़ कर अंजाम दिया तथा अग्रणी भूमिका निभाई।

6. कोतवाल धनसिंह के नेतृत्व में पुलिस फोर्स, क्रांतिकारी भीड़ तथा विद्रोही सैनिकों ने मेरठ जेल पर हमला कर दिया। जेल तोड़कर 836 कैदियों को छुड़ा लिया। जेल में आग लगा दी। मेरठ में अंग्रेजों को डूंढ-डूंढ कर मारा फिर और क्रांतिकारियों ने 'मारो फिरंगियों' का नारा लगा कर दिल्ली की ओर कूच किया।

7. 1857 की क्रांति दमन के बाद अंग्रेजों ने कोतवाल धनसिंह गुर्जर और उसके गाँव पाँचली खुर्द को क्रांति के लिए दोषी ठहरराया। मेरठ में क्रांति के लिए कोतवाल धनसिंह गुर्जर हो जिम्मेदार है। उसमें अंग्रेज पुलिस अफसर की सही भूमिका नहीं निभाई, अधिकतर क्रांतिकारी उसी के जाति के है और उसी के बुलावे पर क्रांति में शामिल हुए है। उसका गाँव पाँचली खुर्द विद्रोही गतिविधियों का केन्द्र है।

8. अंग्रजों द्वारा बदला लेने के लिए 4 जुलाई 1857 को प्रात: 4 बजे गाँव पाँचली खुर्द पर अंग्रेज सेना के लगभग 500 सेनिकों ने पाँचली खुर्द गाँव को घेर लिया। सैनिकों के पास राइफले और तोपे थी, पूरे गाँव पर कई तापों से गोले बरसाये गये। अधिकार लोग मारे गये, जो बचे उन्हें गिरफतार करके फांसी दे दी गई। सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार 46 को गिरफतार कर 40 को फॉसी दे दी गई। वास्तव में फाँसी दिये जाने वाले शहीदों की संख्या बहुत अधिक थी।

1857 के क्रांतिनायक अमर शहीद धन सिंह कोतवाल के परिवार की दस पीढ़ी का वंशावली

तस्वीर सिंह चपराना, चैयरमैन शहीद धनसिंह कोतवाल शोध संसथान

नाहर सिंह

⇩

1-गंगादास 2-हरकेश 3-रामू 4-लालदास 5-मलूक 6-चेतराम

⇩ (1-गंगादास)

1-खराती सिंह 2-मांजीराम

⇩ (2-मांजीराम)

1-रामरूप 2-सालगराम 3-हरगोविन्द 4-रामकरण 5-शाहवराम

⇩ (2-सालगराम)

1-चैनसुख 2-नैनसुख 3-हरिसिंह 4-धनसिंह (कोतवाल) 5-मोहरसिंह 6-मैरूप सिंह 7-मेघराज सिंह

⇩ (7-मेघराज सिंह)

1-महाराजा सिंह (महाराज्जा) 2-उमराव 3-मिशरव (मिराहाव) 4-धर्मवती (पुत्री)

⇩ (1-महाराजा सिंह)

1-झण्डा सिंह (झण्डू सिंह) 2-लाल सिंह 3-शेर सिंह 4-शिवसहाय (शिब्बा)

⇩ (1-झण्डा सिंह)

1-देवी सिंह 2-धर्मसिंह

⇩ (2-धर्मसिंह)

1-गुलाब सिंह 2-होराम सिंह 3-इन्द्रजीत 4-रणजीत 5-राजसिंह 6-जयकरण 7-रामवती (पुत्री)

⇩ (2-होराम सिंह)

1-तस्वीर सिंह चपराना 2-कृष्णबाला (पुत्री) 3-धनेश (पुत्री)

⇩ (1-तस्वीर सिंह चपराना)

1-नवतेज सिंह

तस्वीर सिंह चपराना, चेयरमैन, शहीद धनसिंह कोतवाल शोध संस्थान

1857 के क्रांतिनायक शहीद धनसिंह कोतवाल के ग्राम पाँचली खुर्द का इतिहास-गुर्जर गोत्र चपराना के बुजुर्गो की यात्रा सर्व प्रथम अलकुंड राजस्थान से आरम्भ हुई, सातवीं शताब्दी में राजस्थान 'गुर्जर देश' कहलाता था। गुर्जर देश की राजधानी भीनमाल थी। 628 ईस्वी में वहाँ 'चप' / 'चपराना' वंश के सम्राट 'व्याघ्रमुख' का शासन था। आठवी शताब्दी के आरम्भ में गुर्जरों का बहुतायत में भीनमाल से पलायन हुआ। वे गुर्जर भीनमाल से अजमेर आदि क्षेत्र में बस गये वहाँ उन्होंने पुष्कर तीर्थ को विकसित किया तथा वहाँ से सिरसा हरियाणा, सिरसा से पूरपट्टन, पूरपट्टन से ददरेडा (जाहरवीर राजस्थान), ददरेडा से रणथम्बोर, रणथम्बोर से परमन्दरा, से मेवला महाराजपुर, मेवला महाराजपुर से पाँचली खुर्द में आकर बस गये।

मेरठ के निकट चपराना गोत्र का बारहा अर्थात् बारह गाँव का समूह है। पाँचली खुर्द गाँव चपराना गोत्र का सबसे बड़ा गाँव है। इसी गाँव से नंगला जमालपुर, अफजलपुर पावटी, रामपुर पावटी, पठानपुरा, लखवाया, शोभापुर, खडौली, घाट, लिसाडी, गुमी, गगोल, आदि गाँवों का निकास हुआ है। चपराना गोत्र का यह बारहा अन्य गुर्जर गोत्र के बारहों की तरह गुर्जर प्रतिहारों के समय बसाया गया। सबसे पहले पाँचली खुर्द गाँव गसा। पाँचली खुर्द इस चपराना बारहा का खेडा और मुख्यालय है। अब गाँव में 36 बिरादरी के लोग रहते है जिनमें अधिकतर चपराना गोत्र के गुर्जर है।

गाँव में महात्मा जगदीश्वरानन्द द्वारा स्थापित विश्व प्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र तथा शहीद धनसिंह कोतवाल मण्डलीय होमगार्ड प्रशिक्षण केन्द्र है। गाँव के बुजुर्गो द्वारा पंण्डित विष्णुदत्त शर्मा के सहयोग एवम् मार्गदर्शन से स्थापित इन्टर कालिज विद्यमान है। यहाँ पर सत्ती मैया पूजनीय एतिहासिक स्थल है। बारह गाँव के लोगों द्वारा इनकी पूजा की जाती है। गाँव के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन हैं।

1857 की जनक्रांति के जनक धन सिंह कोतवाल

डा. सुशील भाटी

असि. प्रोफेसर. इतिहास विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाजपुर
उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड।

इतिहास की पुस्तकें कहती हैं कि 1857 की क्रान्ति का प्रारम्भ '10 मई 1857' की संध्या को मेरठ में हुआ। हम तार्किक आधार पर कह सकते हैं कि जब 1857 की क्रान्ति का आरम्भ '10 मई 1857' को 'मेरठ' से माना जाता है, तो क्रान्ति की शुरूआत करने का श्रेय भी उसी व्यक्ति को दिया जा सकता है जिसने 10 मई 1857 के दिन मेरठ में घटित क्रान्तिकारी घटना में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हो।

ऐसी सक्रिय क्रान्तिकारी भूमिका धन सिंह कोतवाल ने 10 मई 1857 एके दिन मेरठ में निभाई थी। 10 मई 1857 को मेरठ में विद्रोही सैनिकों और पुलिस फोर्स ने अंग्रेजों के विरूद्ध साझा मोर्चा गठित कर क्रान्तिकारी घटनाओं को अंजाम दिया। सैनिकों के विद्रोह की खबर फैलते ही मेरठ की शहरी जनता और आस-पास के गांव विशेषकर पांचली, घाट, नंगला, गगोल इत्यादि के हजारों ग्रामीण मेरठ की सदर कोतवाली क्षेत्र में जमा हो गए। इसी कोतवाली में धन सिंह कोतवाल (प्रभारी) के पद पर कार्यरत थे। मेरठ की पुलिस बागी हो चुकी थी। धन सिंह कोतवाल क्रान्तिकारी भीड़ (सैनिक, मेरठ के शहरी, पुलिस और आस-पास के ग्रामीण) में एक प्राकृतिक नेता के रूप में उभरे। उनका आकर्षक व्यक्तित्व, उनका स्थानीय होना, (वह मेरठ के निकट स्थित गांव पांचली के रहने वाले थे), पुलिस में उच्च पद पर होना और स्थानीय क्रान्तिकारियों का उनको विश्वास प्राप्त होना कुछ ऐसे कारक थे जिन्होंने धन सिंह को 10 मई 1857 के दिन मेरठ की क्रान्तिकारी जनता के नेता के रूप में उभरने में मदद की। प्रचलित मान्यता के अनुसार उन्होंने क्रान्तिकारी भीड़ का नेतृत्व किया और रात दो बजे मेरठ जेल पर हमला कर दिया। जेल तोड़कर 839 कैदियों को छुड़ा लिया और जेल में आग लगा दी। जेल से छुड़ाए कैदी भी क्रान्ति में शामिल हो गए। उससे पहले पुलिस फोर्स ने नेतृत्व में क्रान्तिकारी भीड़ ने पूरे सदर बाजार और कैंट क्षेत्र में क्रान्तिकारी घटनाओं को अंजाम दिया। राज में ही विद्रोही सैनिक दिल्ली कूच कर गए और विद्रोह मेरठ के देहात में फैल गया।

मंगल पाण्डे 8 अप्रैल 1857 को बैरकपुर, बंगाल में शहीद हो गए थे। मंगल पाण्डे ने चर्बी वाले कारतूसों के विरोध में अपने एक अफसर को 29 मार्च, 1857 को बैरकपुर छावनी, बंगाल में गोली से उड़ा दिया था। जिसके पश्चात उन्हें गिरफ्तार कर बैरकपुर, बंगाल में 8 अप्रैल को फासी दे दी गई थी। 10 मई, 1857 को मेरठ में हुए जनक्रान्ति के विस्फोट से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है।

क्रान्ति के दमन के पश्चात् ब्रिटिश सरकार द्वारा, 10 मई 1857 को मेरठ में हुई क्रान्तिकारी घटनाओं में पुलिस की भूमिका की जांच के लिए मेजर विलियम्स की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की गई। मेजर विलियम्स ने उस दिन की घटनाओं का भिन्न-भिन्न गवाहियों (डेपोज़िशंस) के आधार पर गहन विवेचन किया तथा इस सम्बन्ध में एक स्मरण-पत्र तैयार किया, जिसके अनुसार उन्होंने मेरठ में जनता की क्रान्तिकारी गतिविधियों के विस्फोट के लिए धन सिंह कोतवाल को मुख्य रूप से दोषी ठहराया, उसका मानना था कि यदि धन सिंह कोतवाल ने अपने कर्तव्य का निर्वाह ठीक प्रकार से किया होता तो संभवत: मेरठ में जनता को भड़कने से रोका जा सकता था। धन सिंह कोतवाल को पुलिस नियंत्रण के छिन्न-भिन्न हो जाने के लिए दोषी पाया गया। क्रान्तिकारी घटनाओं से दमित लोगों ने अपनी गवाहियों में सीधे आरोप लगाते हुए कहा कि धन सिंह कोतवाल क्योंकि स्वयं गूजर है इसलिए उसने विद्रोहियों, जिनमें गूजर बहुसंख्या में थे, को नहीं रोका। उन्होंने धन सिंह पर विद्रोहियों को खुला संरक्षण देने का आरोप भी लगाया। डेपाजिशन (गवाही) संख्या 66 के अनुसार विद्रोहियों ने कहा कि धन सिंह कोतवाल ने उन्हें स्वयं आस-पास के गांव से बुलाया है।

यदि मेजर विलियम्स द्वारा ली गई गवाहियों का विवेचन किया जाये तो पता चलता है कि 10 मई, 1857 को मेरठ में क्रान्ति का विस्फोट काई स्वत: विस्फोट नहीं वरन् एक पूर्व योजना के तहत एक निश्चित कार्यवाही थी, जो परिस्थितिवश समय पूर्व ही घटित हो गई। नवम्वर 1858 में मेरठ के कमिश्नर एफ० विलियम द्वारा इसी सिलसिले से एक रिपोर्ट नोर्थ-वैस्टर्न प्रान्त (आधुनिक उत्तर प्रदेश) सरकार के सचिव को भेजी गई। रिपोर्ट के अनुसार मेरठ की सैनिक छावनी में "चर्बी वाले कारतूस और हड्डियों के चूर्ण वाले आटे की बात" बड़ी सावधानी पूर्वक फैलाई गई थी। रिपोर्ट में अयोध्या से आये एक साधु (हिन्दू फ़कीर) की संदिग्ध भूमिका की ओर भी इशारा किया गया था। विद्रोही सैनिक, मेरठ शहर की पुलिस और जनता तथा आस-पास के गांव के ग्रामीण इस साधु के सम्पर्क में थे। मेरठ के आर्य समाजी,

इतिहासज्ञ एवं स्वतन्त्रता सेनानी आचार्य दीपांकर के अनुसार यह साधु स्वयं दयानन्द जी थे और सही मेरठ में 10 मई, 1857 की घटनाओं के सूत्रधार थे। मेजर विलियम्स को दी गयी गवाही संख्या 8 के अनुसार सदर कोतवाल स्वयं इस साधु से उसके सूरजकुण्ड स्थित ठिकाने पर मिले थे। हो सकता है ऊपरी तौर पर यह कोतवाल की सरकारी भेंट हो, परन्तु दोनों के आपस में सम्पर्क होने की बात से इंकार नहीं किया जा सकता। वास्तव में कोतवाल सहित पूरी पुलिस फोर्स इस योजना में साधु (सम्भवत: स्वामी दयानन्द) के साथ देशव्यापी क्रान्तिकारी योजना में शामिल हो चुकी थी। 10 मई को, जैसा कि इस रिपोर्ट में बताया गया कि, सभी सैनिकों ने एक साथ मेरठ में सभी स्थानों पर विद्रोह कर दिया। ठीक उसी समय सदर बाजार की भीड़, जो पहले से ही हथियारों से लैस होकर इस घटना के लिए तैयार थी, ने भी अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियां शुरू कर दीं। धन सिंह कोतवाल ने योजना के अनुसार बड़ी चतुराई से ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादार पुलिस कर्मियों को कोतवाली के भीतर चले जाने और वहीं रहने का आदेश दिया। आदेश का पालन करते हुए अंग्रेजों के वफादार पिट्ठू पुलिसकर्मी क्रान्तिकारी घटनाओं के दौरान कोतवाली में ही बैठे रहे। इस प्रकार अंग्रेजों के वफादारों की तरफ से क्रान्तिकारियों को रोकने का प्रयास नहीं हो सका, दूसरी तरफ उसने क्रान्तिकारी योजना से सहमत सिपाहियों को क्रान्ति में अग्रणी भूमिका निभाने का गुप्त आदेश दिया, फलस्वरूप उस दिन कई जगह पुलिस वालों को क्रान्तिकारियों की भीड़ का नेतृत्व करते देखागया। धन सिंह कोतवाल अपने गांव पांचली और आस-पास के क्रान्तिकारी गूजर बाहुल्य गांव घाट, नंगला, गगोल आदि की जनता के सम्पर्क में थे, धन सिंह कोतवाल का संदेश मिलते ही हजारों की संख्या में गूजर विद्रोही रात में मेरठ पहुंच गये। मेरठ के आस-पास के गांवों में प्रचलित किवंदन्ती के अनुसार इस क्रान्तिकारी भीड़ ने धन सिंह कोतवाल के नेतृत्व में देर रात दो बजे जेल तोड़कर 839 कैदियों को छुड़ा लिया और जेल को आग लगा दी। मेरठ शहर और कैंट में जो कुछ भी अंग्रेजों से सम्बन्धित था उसे यह विद्रोही क्रान्तिकारियों की भीड़ पहले ही नष्ट कर चुकी थी।

उपरोक्त वर्णन और विवेचना के आधार पर हम नि:सन्देह कह सकते हैं कि धन सिंह कोतवाल ने 10 मई, 1857 के दिन मेरठ में मुख्य भूमिका का निर्वाह करते हुए क्रान्तिकारियों को नेतृत्व प्रदान किया था।

1857 की क्रान्ति की औपनिवेशिक व्याख्या, (ब्रिटिश साम्राज्यवादी इतिहासकारों की व्याख्या), के अनुसार 1857 का गदर मात्र एक सैनिक विद्रोह था जिसका कारण मात्र सैनिक असंतोष था। इन इतिहासकारों का मानना है कि सैनिक विद्रोहियों को कहीं भी जनप्रिय समर्थन प्राप्त नहीं था। ऐसा कहकर वह यह जताना चाहते हैं कि ब्रिटिश शासन निर्दोश था और आम जनता उससे सन्तुष्ट थी। अंग्रेज इतिहासकारों, जिनमें जौन लोरेंस और सीले प्रमुख हैं ने भी 1857 के गदर को मात्र एक सैनिक विद्रोह माना है, इनका निष्कर्ष है कि 1857 को विद्रोह को कही भी जनप्रिय समर्थन प्राप्त नहीं था, इसलिए इसे स्वतन्त्रता संग्राम नहीं कहा जासकता। राष्ट्रवादी इतिहासकार वी०डी०सावरकर और सब-आल्टरन इतिहासकार रंजीत गुहा ने 1857 की क्रान्ति की साम्राज्यवादी व्याख्या का खंडन करते हुए उन क्रान्तिकारी घटनाओं का वर्णन किया है, जिनमें कि जनता ने क्रान्ति में व्यापक स्तर पर भाग लिया था, इन घटनाओं का वर्णन मेरठ में जनता की सहभागिता से ही शुरू हो जाता है। समस्त पश्चिम उत्तर प्रदेश के बन्जारो, रांघड़ों और गूजरों ने 1857 की क्रान्ति में व्यापक स्तर पर भाग लिया। पूर्वी उत्तर प्रदेश में ताल्लुकदारों ने अग्रणी भूमिका निभाई। बुनकरों और कारीगरों ने अनेक स्थानों पर क्रान्ति में भाग लिया। 1857 की क्रान्ति के व्यापक आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक कारण थे और विद्रोही जनता के हर वर्ग से आये थे, ऐसा अब आधुनिक इतिहासकार सिद्ध कर चुके हैं। अत: 1857 का गदर मात्र एक सैनिक विद्रोह नहीं वरन् जनसहभागिता से पूर्ण एक राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम था। परन्तु 1857 में जनसहभागिता की शुरूआत कहाँ और किसके नेतृत्व में हुई? इस जनसहभागिता की शुरूआत के स्थान और इसमें सहभागिता प्रदर्शित वाले लोगों को ही 1857 की क्रान्ति का जनक कहा जा सकता है। क्योंकि 1857 की क्रान्ति में जनता की सहभागिता की शुरूआत धन सिंह कोतवाल के नेतृत्व में मेरठ की जनता ने की थी, अत: ये ही 1857 की जनक्रान्ति के जनक कहे जा सकते हैं।

10, मई 1857 को मेरठ में जो महत्वपूर्ण भूमिका धन सिंह और उनके अपने ग्राम पांचली के भाई बन्धुओं ने निभाई उसकी पृष्ठभूमि में अंग्रेजों के जुल्म की दास्तान छुपी हुई है। ब्रिटिश साम्राज्य की औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था की कृषि नीति का मुख्य उद्देश्य सिर्फ अधिक से अधिक लगान वसूलना था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अंग्रेजों ने महलवाड़ी व्यवस्था लागू की थी, जिसके तहत समस्त ग्राम से इकट्ठा लगान तय किया जाता था और मुखिया अथवा नम्बरदार लगान वसूलकर सरकार को देता था। लगान की दरें बहुत ऊँची थी, और उसे बड़ी कठोरता से वसूला जाता था। कर न दे पाने पर किसानों को तरह-तरह से बेइज्जत करना, कोड़े मारना और उन्हें जमीनों से बेदखन करना एक आम बात थी, किसानों की हालत बद से बदतर हो गई थी। धन सिंह कोतवाल भी एक किसान परिवार से सम्बन्धित थे। किसानों के इन हालातों से वे बहुत दुखी थे। धन सिंह के पिता पांचली ग्राम के मुखिया थे, अत: अंग्रेज पांचली के उन ग्रामीणों को जो किसी कारणवश लगान नहीं दे पाते

थे, उन्हें धन सिंह के अहाते में कठोर सजा दिया करते थे, बचपन से ही इन घटनाओं को देखकर धन सिंह के मन में आक्रोश जन्म लेने लगा। ग्रामीणों के दिलों दिमाग में ब्रिटिश विरोध लावे की तरह धधक रहा था।

1857 की क्रान्ति में धन सिंह और उनके ग्राम पांचली की भूमिका का विवेचन करते हुए हम यह नहीं भूल सकते कि धन सिंह गूजर जाति में जन्में थे, उनका गांव गूजर बहुल था। 1707 ई० में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात गूजरों ने पश्चिम उत्तर प्रदेश में अपनी राजनैतिक ताकत काफी बढ़ा ली थी। लढ़ौरा, मुण्डलाना, टिमली, परीक्षितगढ़, दादरी, समथर-लौहा गढ़, कुंजा बहादुरपुर इत्यादि रियासतें कायम कर वे पश्चिमी उत्तर प्रदेश में एक गूजर राज्य बनाने के सपने देखने लगे थे। 1803 में अंग्रेजों द्वारा दोआब पर अधिकार करने के बाद गूजरों की शक्ति क्षीण हो गई थी, गूजर मन ही मन अपनी राजनैतिक शक्ति को पुन: पाने के लिये आतुर थे, इस दशा में प्रयास करते हुए गूजरों ने, सर्वप्रथम 1824 में, रूड़की के समीप स्थित कुंजा बहादुरपुर के ताल्लुकदार विजय सिंह और कलवा गूजर के नेतृत्व में सहारनपुर में जोरदार विद्रोह किये। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गूजरों ने इस विद्रोह में प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया परन्तु यह प्रयास सफल नहीं हो सका। 1857 के सैनिक विद्रोह ने उन्हें एक और अवसर प्रदान कर दिया। पूरे देश में देहरादून से लेकर दिल्ली तक, मुरादाबाद, बिजनौर, आगरा, झांसी, पंजाब, राजस्थान और महाराष्ट्र तक के गूजर इस स्वतनत्रता संग्राम में कूद पड़े। हजारों की संख्या में गूजर शहीद हुए और लाखों गूजरों को ब्रिटेन के दूसरे उपनिवेषों में कृषि मजदूर के रूप में निर्वासित कर दिया गया। इस प्रकार धन सिंह और पांचली, घाट, नंगला और गगोल आदि ग्रामों के गूजरों का संघर्ष गूज़रों के देशव्यापी ब्रिटिश विरोध का हिस्सा था। यह तो बस एक शुरूआत थी।

1857 की क्रान्ति के कुछ समय पूर्व की एक घटना ने भी धन सिंह और ग्रामवासियों को अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए प्रेरित किया। पांचली और उसके निकट के ग्रामों में प्रचलित किंवदन्ती के अनुसार घटना इस प्रकार है, ''अप्रैल का महीना था। किसाना अपनी फसलों को उठाने में लगे हुए थे। एक दिन करीब 10-11 बजे के आस-पास बजे दो अंग्रेज तथा एक अंग्रेज मेम पांचली खुर्द के आमों के बाग में थोड़ा आराम करने के लिए रूके। इसी बाग के समीप पांचली गांग के तीन किसान जिनके नाम मंगत सिंह, नरपत सिंह और भज्जड़ सिंह थे, कृषि कार्यों में लगे थे। अंग्रेजों ने इन किसानों से पानी पिलाने का आग्रह किया। अज्ञात कारणों से इन किसानों और अंग्रेजों में संघर्ष हो गया। इन किसानों ने अंग्रेजों का वीरतापूर्वक सामना कर एक अंग्रेज और मेम को पकड़ दिया। एक अंग्रेज भागने में सफल रहा। पकड़े गए अंग्रेज सिपाही को इन्होंने हाथ-पैर बांधकर गर्म रेत में डाल दिया और मेम से बलपूर्वक दायं हंकवाई। दो घंटे बाद भागा हुआ सिपाही एक अंग्रेज अधिकारी और 25-30 सिपाहियों के साथ वापस लौटा। तब तक किसान अंग्रेज सैनिकों से छीने हुए हथियारों, जिनमें एक सोने की मूठ वाली तलवार भी थी, को लेकर भाग चुके थे। अंग्रेजों की दण्ड नीति बहुत कठोर थी, इस घटना की जांच करने और दोषियों को गिरफ्तार कर अंग्रेजों को सौंपने की जिम्मेदारी धन सिंह के पिता, जो कि गांव के मुखिया थे, को सौंपी गई। ऐलान किया गया कि यदि मुखिया ने तीनों बागियों को पकड़कर अंग्रेजों को नहीं सौंपा तो सजा गांव वालों और मुखिया को भुगतनी पड़ेगी। बहुत से ग्रामवासी भयवश गाँव से पलायन कर गए। अन्तत: नरपत सिंह और भज्जड़ सिंह ने तो समर्पण कर दिया किन्तु मंगत सिंह को नहीं पकड़ा जा सका। दोनों किसानों को 30-30 कोड़े और जमीन से बेदखली की सजा दी गई। फरार मंगत सिंह के परिवार के तीन सदस्यों को गांव के समीप ही फांसी पर लटका दिया गया। धन सिंह के पिता को मंगत सिंह को न ढूंढ पाने के कारण छ: माह के कठोर कारावास की सजा दी गई। इस घटना ने धन सिंह सहित पांचली के बच्चे-बच्चे को विद्रोही बना दिया। जैसे ही 10 मई को मेरठ में सैनिक बगावत हुई धन सिंह और ने क्रान्ति में सहभागिता की शुरूआत कर इतिहास रच दिया।

क्रान्ति में अग्रणी भूमिका निभाने की सजा पांचली व अन्य ग्रामों के किसानों को मिली। मेरठ गजेटियर के वर्णन के अनुसार 4 जुलाई 1857 की सुबह धन सिंह कोतवाल के गाँव पांचली पर एक अंग्रेज 'खाकी रिसाले' ने तोपों से हमला किया। 'खाकी रिसाले' में 56 घुड़सवार, 38 पैदल सिपाही और 10 तोपची थे। इनके अतिरिक्त 100 राइफलधारी तथा 60 कारबाइनो से लैस सिपाही थे। पूरे को गाँव को तोपों से उड़ा दिया गया और भरी गोलीबारी की गई। सैकड़ों किसान मारे गए, जो बच गए उनमें से 46 लोग कैद कर लिए गए और इनमें से 40 को बाद में फांसी की सजा दे दी गई। आचार्य दीपांकर द्वारा लिखित पुस्तक 'स्वाधीनता आन्दोलन और मेरठ' के अनुसार पांचली के 80 लोगों को फांसी की सजा दी गई थी। स्वामी वासुदेवानंद तीर्थ द्वारा लिखित पुस्तक 'आर्य समाज एवं स्वतंत्रता सेनानी' के अनुसार पांचली में लगभग 400 लोग अंग्रेजों की गोलियों से शहीद हुए। पूरे गांव को आग लगा कर नष्ट कर दिया गया।

संदर्भ एवं टिप्पणी

1. मेरठ डिस्ट्रक्ट गजेटेयर, गवर्नमेन्ट प्रेस, 1963 पृष्ठ संख्या 52

2. वही

3. पांचली, घाट, गगोल आदि ग्रामों में प्रचलित किवदन्ती, बिन्दु क्रमांक 191, नैरेटिव ऑफ इवेन्टस अटैन्डिग द आऊट बैक ऑफ डिस्टरबैन्सिस एण्ड दे रेस्टोरेशन ऑफ औथरिटी इन डिस्ट्रिक्ट मेरठ 1857-58, नवम्बन 406, दिनांक 15 नवम्बर 1858, फ्राम एफ० विलयम्बस म. 59 सैकेट्री टू गवर्नमेंट नार्थ-वैस्टर्न प्राविन्स, इलाहाबाद, राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली।

आचार्य दीपांकर, स्वाधीनता संग्राम और मेरठ, 1993 पृष्ठ संख्या 143

4. वही, नैरेटिव इन डिस्ट्रिक्ट मेरठ।

5. मैमोरेन्डम ऑन द म्यूंटनी एण्ड आऊटब्रेक ऐट मेरठ इन मई 1857,बाई मेजर विलयम्स, कमिश्नर ऑफ द मिलेट्री पुलिस, नार्थ-वेस्टर्न प्राविन्सिस, इलाहाबाद, 15 नवम्बर 1858; जे०ए०बी० पामर, म्यूटनी आऊटब्रेक एट मेरठ, पृष्ठ संख्या 90-91।

6. एडेपाजिशन नम्बर 54, 56, 59 एवं 60 आफ डेपाजिशन टेकन एट मेरठ बाई जी०डब्ल्यू० विलयम्बस, वही म्यूटनी नैरेटिव इन डिस्ट्रिक्ट मेरठ।

7. वही, डेपाजिशन नम्बर 66

8.वही, बिन्दु क्रमांक 152, म्यूटनी नैरेटिव इन मेरठ डिस्ट्रिक्ट।

9. वहीं, डेपाजिशन नम्बर 8

10. वही, सौन्ता सिंह की गवाही (डेपाजिशन नम्बर 65)।

11. वही, डेपाजिशन संख्या 22, 23, 24, 25 एवं 26।

12. वही, बिन्दु क्रमांक 191, नैरेटिव इन मेरठ डिस्ट्रिक्ट; पांचली, नंगला, घाट, गगोल आदि ग्रामों में प्रचलित किंवदन्ती।

13.वही किंवदन्ती।

14.नेविल, सहारनपुर ए गजेटेयर, 1857 की घटना से सम्बंधित पृष्ठ।

15. मेरठ के मजिस्ट्रेट डनलव द्वारा मेजर जनरल हैविट कमिश्नर मेरठ को 28 जून 1857 को लिखा पत्र, एस०ए०ए०रिजवी, फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश, खण्ड टए लखनऊ, 1960 पृष्ठ संख्या 107-110।

16. नेविल, वही; एच०जी०वाटसन, देहरादून गजेटेयर के सम्बन्धित पृष्ठ।

17. वही, किंवदन्ती यह किवदन्ती पांचली ग्राम के खजान सिंह, उम्र 90 वर्ष के साक्षात्कार पर आधारित है।

18. बिन्दु क्रमांक 265, 266, 267, वही, नैरटिव इन डिस्ट्रिक्ट मेरठ।

19. स्वामी वासुदेवानंद तीर्थ, आर्य समाज एवं स्वतंत्रता सेनानी, बागपत (मेरठ), 1991, पृष्ठ संख्या 54-55

संदभ्र ग्रन्थ

1. आचार्य दीपांकर, स्वाधीनता संग्राम और मेरठ, जनमत प्रकाशन, मेरठ 1993

2. मेरठ डिस्ट्रिक्ट गजेटेयर, गवर्नमेनट प्रैस, इलाहाबाद, 1963

3. मयराष्ट्र मानस, मेरठ।

4. रमेश चन्द्र मजूमदार, द सिपोय म्यूटनी एण्ड रिवोल्ट ऑफ 1857

5. एस०बी०चौधरी, सिविल रिबैलयन इन इण्डियन म्यूटनीज 1857-59

6. एस०एन०-सेन, 1857

7. पी०सी० जोशी रिबैलयन 1857।

8. एरिक स्ट्रोक्स, द पीजेण्ट एण्ड द राज।

9. जे०ए०बी०पामर, द म्यूटनी आउटब्रैक एट मेरठ।

अशोक चौधरी
मो.: 9837856146

मेरठ से सन् 1857 की क्रान्ति का प्रारम्भ हुआ। क्रान्तिकारियों के बलिदान व संघर्ष से ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन समाप्त होकर रानी विक्टोरिया के हाथों में चला गया। परन्तु अंग्रेजी मानसिकता नहीं बदली। वे अपने शासन को न्यायकारी ठहराते रहे उन्होंने कहा कि भारतीय आम आदमी उनके शासन में प्रसन्न था। लेकिन भारतीय सेना उसमें भी बंगाल नेटिव इन्फेन्ट्री के सिपाहियों ने विद्रोह किया जिसे दबा दिया गया।

परन्तु इस संघर्ष में भारतीय सेना के साथ आम भारतीय नागरिकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया लाखों की संख्या में आम आदमी की शहादत हुई। प्रारम्भ में अंग्रेज इस बात को इधर-उधर करते रहे, वे कहते रहे कि कुछ रजवाड़े हमारे विरुद्ध थे, पेशवा विरुद्ध थे, कुछ जातियाँ हमारे विरुद्ध हो गई थीं। उन्होंने ही विद्रोहियों का साथ दिया। परन्तु अंग्रेजों के अनुसार ही आम भारतीय का प्रतिशत उन सब विरोधियों को जोड़कर इतना हो गया कि वह अपने आप ही जनक्रान्ति में बदल गया।

अंग्रेजों के सैनिक विद्रोह के आधार पर सबसे पहली चोट वीर सावरकर ने मारी और सन् 1907 में लंदन में The Indian War of Independence नाम से एक किताब लिखी जिससे भय खाकर अंग्रेजों ने छपने से पहले ही उसे जब्त कर लिया तथा वीर सावरकर को कारागार में डाल दिया।

आजादी के पश्चात् मेरठ में क्रान्ति दिवस (10 मई) को प्रत्येक वर्ष सरकारी व गैरसरकारी संस्थाएं कार्यक्रम करती आ रही थी। परन्तु मेरठ से इस जनक्रान्ति का प्रारम्भ किसने किया, मेरठ के आसपास के गाँव में रहने वाले बागपत रोड पर स्थित घाट, पाँचली खुर्द व गगोल के गाँव वालों में यह किवदंतियाँ प्रचलित रही हैं कि उनके बुजुर्गों ने क्रान्ति में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया जिस कारण अंग्रेजों ने उनके गाँव उजाड़ दिये, सैकड़ों लोगों को बिना मुकदमा चलाये ही गोली से मार दिया। परन्तु इसका कोई प्रचार प्रसार आम जनमानस में नहीं था।

सन् 1997 की बात है कि मेरे (अशोक चौधरी) निवास 108 नेहरू नगर, गली नं० 1, गढ़ रोड, मेरठ के पास एक सामाजिक कार्यकर्ता जिनका नाम राजबल सिंह था और वह गढ़ रोडद्व पर स्थित लोधीपुर छब्बका जो हापुड़ जिले में है रहते थे। वो मेरे पास आये उनके साथ जिला पंचायत मेरठ मे कार्यरत् कर्मचारी जय कुमार सिंह भी थे। उन्होंने एक कार्ड मुणे दिया और कहा कि देहात मोर्चा संगठन के बैनर तले मेरठ के आई.एम.ए. हॉल में 10 मई को एक कार्यक्रम शहीद धन सिहं कोतवाल जी की स्मृति में हो रहा है, आप आएं। मैं कार्यक्रम में पहुँच उस कार्यक्रम में मेरठ कालिज के इतिहास के एक प्रोफेसर आए हुए थे लेकिन उन्होंने अपना उद्बोधन गाँधी जी पर केन्द्रित रखा। शायद धन सिंह कोतवाल जी के विषय में उनका अध्ययन नहीं था। इस कार्यक्रम को मेरठ के नजदीक रहने वाले गाँव रामपुर पावटी के कृष्णपाल चपराना व कैलाश चपराना ने किया था।

मैं वापस आकर अपने कार्य में लग गया। कुछ दिनों पश्चात् मेरठ आर्य समाज सूरजकुण्ड से एक पत्रक जो हर वर्ष निकलता था, आर्य समाज के मन्त्री डॉ० आर०पी० सिंह चौधरी फूलबाग निवासी ने मुझे दिया। उसमें 10 मई धन सिंह कोतवाल बलिदान दिवस लिखा था। मैंने चौधरी साहब से पूछा कि यह किस आधार पर लिखा है। उन्होंने कहा कि यह तो पहले से ही छपता आ रहा है।

एक सामाजिक कार्यकर्ता रमेश चन्द नागर जो मेरी गली में ही रहते थे मेरे अच्छे मित्र थे। उनके पास उनकी बहन के बेटे डॉ० सुशील भाटी जो इतिहास से पी०एच०डी० थे मुझे मिले, मैंने धन सिंह कोतवाल जी के बारे में उनसे चर्चा की। उन्होंने बताया कि घटना सत्य है। मेरठ गजेटियर में लिखी है। उन्होंने मेरठ विश्वविद्यालय से उस गजट की फोटो स्टेट कापी लाकर मुझे दे दी जिसमें 10 मई 1857 की घटना का उल्लेख तथा धन सिंह कोतवाल का नाम था।

अब मेरे मन में इस विस्मृत शहीद के लिए कुछ प्रचार प्रसार करने की इच्छा जाग्रत हुई। मेरठ के पास गगोल तीर्थ नाम का स्थान है, वहाँ ग्राम गगोल के रहने वाले एक सेवानिवृत्त इंजीनियर सतपाल सिंह जनसेवा पंचायत के नाम से संगठन चलाते थे। उनकी बैठक में 31 अक्टूबर सन् 1997 को मैं पहुँचा, उनसे विचार विमर्श कर मैंने अपनी इच्छा प्रकट की कि धन सिंह कोतवाल जी के गाँव पाँचली खुर्द में 10 मई 1998 को एक कार्यक्रम किया जाये, जिस पर उन्होंने अपनी सहमति दे दी। उसी पंचायत में गुमी गाँव के कार्यकर्ता कर्मवीर सिंह गुमी,

विजयपाल सिंह गुमी तथा पाँचली गाँव के प्रधान पति स्व० भूले सिंह चेयरमैन के छोटे बेटे सुरेन्द्र सिंह भी थे जो सहमत हो गए। मेरठ से मेरे साथ रमेश चन्द नागर, देशपाल सिंह, सुभाष गुर्जर, काजीपुर के सुरेन्द्र सिंह भड़ाना, बक्सर के प्रताप सिंह, बेगमबाग से पार्षद सुशील गुर्जर, पल्लवपुरम से इंजीनियर सुरेन्द्र सिंह जी थे।

अब विचार यह बना कि धन सिंह कोतवाल जी का चित्र बने। पाँचली निवासी बुजुर्गों से विचार विमर्श कर धन सिंह कोतवाल जी का चित्र मेरठ के घंटाघर के पास लाला के बाजार में स्थित भारद्वाज पेंटर से बनावाया गया तथा 10 मई सन् 1998 को ग्राम पाँचली में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें उपरोक्त साथियों के साथ पाँचली खुर्द गाँव के निवासियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम में पूर्व विधायक राम किशन वर्मा जी बतौर मुख्य अतिथि रहे। पाँचली मैन रोड पर ही धन सिंह कोतवाल के शहीद स्मारक के लिए पाँच ईंटे रख दी गई। तत्कालीन जिलाधिकारी संजय अग्रवाल जी ने ग्राम पंचायत पाँचली को 25000/- रु० शहीद स्मारक के लिए दिए, जिसमें शहीद स्मारक का चबूतरा व थोड़ा-सा पिलर खड़ा हो गया। उसके पश्चात 27 फरवरी सन् 1999 को मेरठ चैम्बर ऑफ कामर्श में पूर्व गृह राज्य मन्त्री श्री राजेश पायलट जी को क्रान्तिकारी विजय सिंह पथिक के जन्म दिवस पर बुलाया गया। इस कार्यक्रम में वर्तमान जिला पंचायत अध्यक्ष कुलविन्दर सिंह के पिता जी श्री मुखिया गुर्जर भी सम्मिलित हुए। श्री पायलट जी के कर कमलों से एक पोस्टर का विमोचन किया गया जिसमें सरदार पटेल, विजय सिंह पथिक व धन सिंह कोतवाल जी के चित्र थे तथा नीचे कार्यक्रम को करने वाले कार्यकर्ताओं के नाम लिखे थे।

10 मई सन् 1999 को चैम्बर ऑफ कामर्स में मेरे (अशोक चौधरी) साथ श्री सुनील भड़ाना, जुर्रानपुर के द्वारा तथा चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के सुभाष चन्द बोस सभागार में देहात मोर्चा के द्वारा क्रान्ति दिवस पर शहीद धन सिंह कोतवाल जी की याद में कार्यक्रम किये गये। इन दोनों कार्यक्रम में पूर्व उप मुख्यमन्त्री श्री रामचन्द विकल जी तथा तत्कालीन मन्त्री चौधरी जयपाल सिंह जी ने सहभागिता की। 10 मई की पूर्व संध्या 09 मई को भी एक कार्यक्रम शहीद स्मारक पर किया गया।

धन सिंह कोतवाल जी का चित्र पूरे भारत में पहुँचे इसके लिए अखिल भारतीय गुर्जर महासभा जिसका ऑफिस दिल्ली में था के तत्कालीन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रामशरण भाटी व सुधीर बैसला से सहयोग लिया गया। मेरे (अशोक चौधरी) द्वारा शहीद धन सिंह कोतवाल के चित्र के साथ अन्य भारतीय महापुरुषों के चित्र से सुशोभित एक केलेण्डर बनवाया गया तथा गुर्जर महासभा दिल्ली के माध्यम से 12 प्रदेशों में 100-100 की संख्या में लगातार चार वर्षों तक पहुँचराया गया।

अब धन सिंह कोतवाल जी का चित्र पूरे भारत में था। तत्कालीन मन्त्री चौधरी जयपाल सिंह की सिफारिश से प्रदेश के सांस्कृतिक मन्त्री रमेश पोखरयाल जी के द्वारा धन सिंह कोतवाल जी की प्रतिमा बनकर मेरठ पहुँची, जिसे 02 अक्टूबर सन् 2002 में मवाना स्टेण्ड के पास स्थापित कर अनावरण कर दिया गया। अनावरण कार्यक्रम में बाबू हुकुम सिंह जी केबिनेट मन्त्री मुख्य अतिथि तथा पूर्व मन्त्री चौधरी जयपाल सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस प्रतिमा स्थापना के लिए स्थान दिलवाने में मेरठ नगर निगम के डिप्टी मेयर श्री सुशील गुर्जर व काजीपुर के पार्षद राजकुमार का सहयोग रहा। डॉ० सुशील भाटी जी द्वारा धन सिंह कोतवाल पर लिखित शोध पत्र का विमोचन किया गया। नोएडा के रहने वाले नेपाल सिंह कसाना जी भी सहयोग में रहे।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के तत्कालीन वी०सी०श्री रमेश चन्द्रा जी द्वारा विश्वविद्यालय छात्र संघ के तत्कालीन महामन्त्री जयवीर सिंह राणा के प्रस्ताव पर धन सिंह कोतवाल सामुदायिक केन्द्र के नाम से एक भवन का नामकरण किया गया। सन् 2015 में श्री सुनील भड़ाना जी के द्वारा अपने गाँव जुर्रानपुर में शहीद धन सिंह कोतवाल हाई स्मूल विद्यालय का निर्माण कराया गया। पाँचली के ग्राम प्रधान भोपाल सिंह तथा होमगार्ड के इन्सपेक्टर वेदपाल सिंह चपराना तथा केन्द्रीय मन्त्री वेदराम भाटी जी के प्रयास से मार्च 2010 में धन सिंह कोतवाल मण्डलीय प्रशिक्षण केन्द्र होमगार्ड का शिलान्यास कर, 14 करोड़ की लागत में मई 2016 में इस केन्द्र का लोकार्पण कर दिया गया। पाँचली में स्थित अधूरे शहीद स्मारक को तत्कालीन क्षेत्रीय विधायक विनोद हरित के सहयोग से विधायक निधि के द्वारा पूर्ण कर दिया गया। सुभारती विश्वविधलय के एक गेट का नाम शहीद धन सिंह कोतवाल के नाम पर रखा गया। मेरे (अशोक चौधरी) द्वारा 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम और कोतवाल धन सिंह नामक लघु पुस्तिका भी लिखी गई।

शहीद धन सिंह कोतवाल मेरठ की सदर कोतवाली के कोतवाल थे। हम सब साथियों की इच्छा थी कि उनकी कोई प्रतिमा सदर कोतवाली में भी होनी चाहिए। सन् 2012 में सतवीर सिंह गुर्जर जो वर्तमान में हापुड़ जिला में बिरसंगपुर गाँव के निवासी हैं तथा गाँव के प्रधान भी रहे हैं के साथ जाकर सदर थाना इन्चार्ज को धन सिंह कोतवाल का एक बड़ा चित्र भेंट किया गया। उसके पश्चात् प्रत्येक 10 मई को तत्कालीन विधायक श्री रविन्द्र भड़ाना और मैं (अशोक चौधरी) इस चित्र पर माल्यार्पण करने के लिए प्रत्येक वर्ष जाते रहे हैं।

इस वर्ष 10 मई 2018 को पूर्व विधायक रविन्द्र भड़ाना जी और मैं (अशोक चौधरी) चित्र पर माल्यार्पण करने के लिए पहुँचे तथा उसके पश्चात् हम दोनों मवाना स्टेण्ड पर लगी धन सिंह कोतवाल की प्रतिमा पर पहुँचे, इत्तेफाक से उसी समय मेरठ के तत्कालीन वरिष्ठ पुलिस अधिक्षक श्री राजेश कुमार पाण्डे जी भी पहुँच गए। वहाँ पर कर्मवीर गुमी व जगदीश पूठा ने अपने साथियों के साथ मंच, माईक व जलपान की व्यवस्था कर रखी थी।

पाण्डे जी के मन में शहीदों के प्रति जितना सम्मान मैंने देखा वह बिरले लोगों में ही मिलता है। सन् 1917 से आज तक लगातार अधिकारी मेरठ में आते जाते रहे हैं परन्तु वे सब माल्यार्पण का फर्ज निभाया और अपने काम से काम रखते रहे। लेकिन पाण्डे जी ने वहीं पर ही अपने सम्बोधन में कहा कि जिस शहीद ने अपने लहू से सैनिक विद्रोह को जन क्रान्ति में बदल दिया उसकी प्रतिमा सदर थाने में जरूर लगवाई जायेगी, जिस सदर कोतवाली में वो कोतवाल रहे हैं। अपपी कथनी को करनी में बदलते हुए आत 03 जुलाई सन् एA2018 एको (04 जुलाई सन् 1857 को धन सिंह कोतवाल के गाँ पाँचली खुर्द पर अंग्रेजों द्वारा बनाये गये खाकी रिसाला ने तोप से हमला कर असंख्य लोगों को शहीद कर दिया था) प्रतिमा का अनावरण पाण्डे जी के अथक प्रयास उनके मन में शहीदों के प्रति सम्मान के कारण सदर थाने में किया गया है। इसके लिए पाण्डे जी धन्यवाद व बधाई के पात्र हैं।

UTTAR PRADESH DISTRICT GAZETTEERS

MEERUT

(Srimati) Esha Basanti Joshi

B.A. (Hons.), M.A., L.T., T.Dip. (London), I.A.S.

Commissioner-oum-State Editor

Published by the Government of Uttar Pradesh

(Department of District Gazetteers, U.P., Lucknow)

and

Printed at the Government Press, Allahabad. U.P.

1965

and, and the want of ... concentration of capital in commerce and manufactures".

In pursuance of the activities launched in the state in 1847 by the Wahabis (a religious Muslim sect) with th aim of re establishing Muslim-rule in India, some of them set up a centre in Meerut for the purpose of exhorting the Muslims to wage jehad (a holy war) against the British.

At the close of 1856, Ahmadullah (popularly known as the Maulvi of Faizabad0 stayed for some time at Meerut and preached the gospel of political freedom to the Indian soldiers. At the time of the outbreak of the struggle for freedom the revenue division of Meerut comprised the districts of Meerut, aligarh, Bulandshahr, Dehra Dun, Muzaffarnagar and Saharanpur, the district of Meerut covering an area of 2,379 square miles with a population exceeding a million. Early in 1857 rumours were curent in the bazars of Meerut and among the Indian soldiery of the contonment that the cartridges about to be issued to teh troops were greased with the fat of cows and pigs and that flour sold in the cantonment bazar was mixed with powdered bones, measures said to be taken to injure the religious susceptibilities of both the Hindus and the Muslims. Other causes which aggravated the situation were the receipt of the news of the execution of some Indian soldiers in Dum Dum, including Mangal Pande (who is said to have been transferred from Merrut to the Barrackpur contonment because he was suspected of inciting his fellow soldiers not to use the greased cartridge when they would be issued), the poor pay of the Indian soldiers and their ill-treatment by the British officers. Discontent due to these causes had also permeated a number of other contonments in northern India. Nana Dhondu Pant, one of the celebrated leaders of the freedom struggle of 1857, and his adviser, Azimullah, visited Meerut in March or April in order to assess the situation. Early in April a Hindu faqir seated on an elephant and accompanied by a number of horsemen and carriages came to the city where he was visited by many Indian soldiers from the contonment. He was suspected of instigating them against the British and was ordered to leave the locality but is said to have remained concealed for sometime in lines of the 20th Native Infantry.

At this time there were stationed in the cantonment English troops consisting of a battalion of rillemen, a regiment of carbineers, a troop of horse

artillery, a light field battery and Indian troops consisting of a regiment of cavalry and three of infantry. The military authorities brought matters to a head by deciding to test the reactions of the Indian brought matters to a head by deciding to test the reactions of the Indian cavalrymen to the use of the new cartridges. Brijmohan Singh, a trooper, told some soldiers that under the orders of the commander he had torn off with his teeth the greased paper covering one of these cartridges and all the soldiers would have to do the same. This incident enraged the soldiers and though they remained calm on the whole sporadic incidents of incediarism, began to occur commencing with the burning down of

Brijmohan's house on the thirteenth. About ten days later the Hindu and Muslim soldiers of this regiment took an oath not to use the cartridges which would be given to them at the parade to be held next day. At this parade the eighty-five troopers out of ninety who refused to obey the command to use the cartridges were placed under arrest. A court of inquiry consisting of six Indian officers assisted by a British officer was held which found that there was nothing in the cartridges which could offend the religious scruples of either the Hindus or the Muslims. The authorities ordered that these eighty-five accused persons be tried by court martial. The court, which conducted its proceedings in Meerut, consisted to nine Hindu and six Muslim officers, ten being from the regiments of Meerut and five from Delhi. The prisoners did not offer any defence and were found guilty by a majority of fourteen and were sentenced to ten years rigorous imprisonment. The officer commanding the military station reduced the sentence of eleven tropers to five years each. On the morning of May 9, all the troops assembled on the parade ground. The convicts, stripped of their uniforms and arms, were brought to the parade ground under a guard of rifles and carbineers. When the sentence was read out the condemned men appealed for reconsideration of their case but did not receive a sympathetic response. At this the in cignation of the Indian soldiers present flared up but they made no open move as the Enropean troops were ready for action with loaded guns. The prisoners were marched off to the new goal near Suraj Kund and were placed under the guard of the Indian infantry. "The storm suddenly broke out after five. A cook-boy rushed to the sepoy lines with the news that the Artillery and the Rifles were on their way to serize the regimental arms." The city and the

artillery, a light field battery and Indian troops consisting of a regiment of cavalry and three of infantry. The military authorities brought matters to a head by deciding to test the reactions of the Indian brought matters to a head by deciding to test the reactions of the Indian cavalrymen to the use of the new cartridges. Brijmohan Singh, a trooper, told some soldiers that under the orders of the commander he had torn off with his teeth the greased paper covering one of these cartridges and all the soldiers would have to do the same. This incident enraged the soldiers and though they remained calm on the whole sporadic incidents of incediarism, began to occur commencing with the burning down of Brijmohan's house on the thirteenth. About ten days later the Hindu and Muslim soldiers of this regiment took an oath not to use the cartridges which would be given to them at the parade to be held next day. At this parade the eighty-five troopers out of ninety who refused to obey the command to use the cartridges were placed under arrest. A court of inquiry consisting of six Indian officers assisted by a British officer was held which found that there was nothing in the cartridges which could offend the religious scruples of either the Hindus or the Muslims. The authorities ordered that these eighty-five accused persons be tried by court martial. The court, which conducted its proceedings in Meerut, consisted to nine Hindu and six Muslim officers, ten being from the regiments of Meerut and five from Delhi. The prisoners did not offer any defence and were found guilty by a majority of fourteen and were sentenced to ten years rigorous imprisonment. The officer commanding the military station reduced the sentence of eleven tropers to five years each. On the morning of May 9. all the troops assembled on the parade ground. The convicts, stripped of their uniforms and arms, were brought to the parade ground under a guard of rifles and carbineers. When the sentence was read out the condemned men appealed for reconsideration of their case but did not receive a sympathetic response. At this the in cignation of the Indian soldiers present Hared up but they made no open move as the Enropean troops were ready for action with loaded guns. The prisoners were marched off to the new goal near Suraj Kund and were placed under the guard of the Indian infantry. "The storm suddenly broke out after five. A cook-boy rushed to the sepoy lines with the news that the Artillery and the Rifles were on their way to serize the regimental arms." The city and the

cantonment started seething with excitement as rumors began to spread that the European regiments were going to attack the Indian soldiers and disarm them. The men of the third cavalry (to which the prisoners belonged) considered sending an appeal on behalf of their condemned comrades to teh authorities and to follow this up with a petition on the government. On the morning of the next day, which was a Sunday, unaware of the events that were impending, the Europeans went to church as usual and till noon even the cantonment appeared to be in a normal condition. Then a rumour ran round the city like wildfire that the English soldiers would be let loose against the Indians and the bazars would be looted. The Indian soldiers of the 20th Regiment seized 'their muskets but the 11th still hesitated'. Colonel Finnis, the officer commanding the 11th, was killed and his men joined those of the 20th. Captain Macdonald of the 20th and an English officer of the education department were killed next and the other English miltiary officers were attacked or were told to leave. At 6.30 in the evening 1,200 Indian soldiers galloped to the gaol and released their eighty-five comrades but they did not interfere in any other way with the gaol, its authorities or its inmates. By now the inhabitants of the city and the people of neighbouring villages and hamlets had joined the rising and the area from Begum Bridge to Sadar Bazar was in flames. Europeans were indiscriminately killed. The Indian soldiers held a conference to decide the future line of action and, according to Mohan Lal (a contemporary), they decided to march to Delhi. The British got their carbineers and the 60th Rifles under arms but the situation was now outside their control. The cantonment was deserted. At night the telegraph wires were cut by the people. The Indian troops as well as the police including the kotwal, Dhanna Singh, made common cause against the British. About midnight the villagers attacked the gaol, released its 839 prisoners and set fire to the building. The 720 prisoners in the old jail were also released by some Indian soldiers. Thousands of Gujars from the neighboring villages came to Meerut, set fire to the lines of the sappers and miners, destroyed other parts of the fact whether their vicitims were Indian or European. Nevertheless there were some outstanding instances of human conduct on the part of some of the Indian troopers, particularly those under Mackenzie who vowed to protect the lives of his sister and Captain Craigies wife. Part of the Indian infantry of Meerut marched to Delhi and Bahadur Shah II agreed to become their leader in the struggle for freedom. All

administration practically came to a stop in Meerut but not a single rupee of the treasury was touched. The lieutenant governor of the North-|Western Provinces (at Agra) was informed of the rising of Meerut by the district authorities. On May 11 and 12 the tahsil of Sardhana was attacked by the Rajputs and Ranghars (particularly those of the village of Garhi) who looted the bazar and drove out the authorities. Qalandar Khan, a havildar of Nirpura (in pargana Barnawa), declared himself the raja of that area. A number of people returning to Meerut brought the news that Europeans were being massacred at Delhi. As civil authority at Meerut had almost collapsed on May 13, General Hewett enforced martial law throughout the district by proclamation. A week later the bridge on the Hindan was destroyed by the people isolating Meerut and other northern districts of the province from Delhi. The lieutenant governor appealed to the zamindars on May 22 to extend their fullest co-operation in restoring order and also warned the refractory elements that their property would be confiscated. Two persons who had been sent to Meerut by Bahadur Shah II reported to him that about 1,000 European soldiers had erected fortification at Suraj Kund and were equipped with guns drawn by elephants. On May 30 and31 engagements took place on the Hindan near Ghaziabad between the nationalist forces from Delhi (led by Prince Mirza Abu Bakar, Bahadur Shah's grandson) consisting of cavalry, field and horse artillery and the British troops under Brigadier Wilson who commanded a big force including artillery, but the former lost the day.

Under cover of the larger struggle local and personal feuds and jealousies also raised their heads in different parts of the district. In tahsil Baraut the enmity between the two Jat zamindars, Shiv Singh and Mohar Singh, came to a head when the latter was released from the Meerut jail on May 10 and returned home. Shah Mal, a Jat zamindar of Bijrol, and Mohar Singh were at daggers drawn. Shah Mal collected a large number of followers from the neighboring areas and destroyed the police-station and the tahsil building of Baraut. About 800 Gujars (under Mital) attacked Baghpat. At first the people of the place offered resistance and Mital was wounded by one Jamni but after wards the people seem to have becme reconciled to the Gujars who then left the place. Twenty-eight villages of this tahsil are said to have participated actively in the struggle against the British. Raja Sarup Singh of Jind (inPunjab) did not support the fighters for freedom in these parts and at the time held the alternative route

between Meerut and Delhi via Baghpat but Shah Mal plundered Baghpat and destroyed the bridge of boats (on the Yamuna) and was joined by many Indian soldiers who had come over from the British army and by other fighters in the cause of freedom who hailed from different places. About 125 men of the 11th Native Infantry, who had been disarmed by the British although they had not joined the movement against them, enlisted in the police force and were distributed in four or five groups over the disturbed area of Baghpat and Baraut. On June 3, news of the outbreak of the struggle was received at Meerut from the district of Rohilkhand. A number of European refugees from Moradabad arrived at Garhmuktesh war. The situation around Meerut became critical as the fighters from these areas (particularly from Bareilly) tried to cross into Meerut although a British force was guarding the boat bridge between Moradabad and Meerut at Garhmukteshwar. The British tropps at Meerut were not able to deal with them and the district remained disturbed almost for the whole of June. Kadam Singh, the Gujar, set himself up as raja of Parichhatgarh and Mawana and banded his clansmen together. Towards the end of June the British authorities formed a volunteer corps (mainly of unemployed Europeans) which came to be known as the Khaki Risala. Dunlop (the collector or Meerut) also recruited some Sikh horsemen who had offered their services to quell the disturbances. The Indian bankers of the district refused to advance any money to the British authorities who had none in their treasury.

On July 4, the Risala which was armed wit two guns surrounded and attacked the Gujar villages (particularly Panchli Ghat and Nagla) about five miles from Meerut, killing some of the inhabitants, making some prisoners and burning the villages. Dunlop, with the help of the Risals, also made punitive expeditions into the interior of the district for realizing the land revenue and establishing the authority of the British. On July 8, the Gujars of Sikri looted and burnt the town of Begumabad and killed a number of pro-British Jats. At this Dunlop attacked the village of Sikri and defeated the Gujars through they fought bravely.

Shah Mal, who had maintained a sort of semi-independent status since the outbreak of the struggle, was carrying on guerilla war against the British. In

retaliation Dunlop left Meerut on July 16 with a force of 200 armed men and on reaching Dalhauna (a village on the Hindan) the next morning he heard that Shah Mal was to attack the village of Daula nearby. But when the British reached it they found that Shah Mal has moved away at night leaving behind large quantities of grain in Basodha (a neighbouring village) which was meant to be conveyed to the camp of the freedom fighters at Delhi. The British destroyed this supply. A skirmish followed, Shah Mal and his forced retreating further towards Baraut with heavy losses. On July 18 the British pursued them plundering the villages on the way. At one place Dunlop, who with a small party had detached himself from the main body of his force, was surrounded by a host and it was with difficulty that he could save his life and rejoin his army. The countryside was rising as a man against the British domination and signals by drum beat were being relayed from village to village for the people to assemble to fight the enemy. Shah Mal had thus collected a force of abut 2,000 strong and Dunlop had entrenched himself in an orchard outside the town of Baraut. A fierce battle took place between the opposing forces many on both sides being killed in hand-to-hand fights and Shah Mal himself dying fighting in the cause of freedom. His head was cut off by the British and was exhibited publicly. Nevertheless Shah Mal's men attacked the British once again but they were defeated. As Narpat Singh, a local zamindar of Akalpura, had refused to pay the land revenue the Risala marched from Baraut to Sardhana and the magistrate killed him. It went on the attack the village of Garhi in order to punish the inhabitants for the part they had played in the plunder of Sardhana in May. The Rajputs of the village of Dhaulana attacked the tahsil of Muradnagar on July 30 and destroyed the police-station. They were joined by the freedom fighters from Ghaziabad. Torab Ali, an officer, was expelled from Muradnagar where the freedom fighters appointed their own officials as they also did in Dasna and Dhaulana. The Khaki Risala led an expedition and expelled the freedom fighters from Dhaulana and the lands of the zamindars of this place were confiscated by the collector of Meerut and distributed among the zamindars of Solana who had sided with the British.

Walidad Khan, the nawab of Malagarh (in district Bulandshahr), joined the freedom fighters and intended to attack. Hapur and Meerut and by the middle

of August he was joined by a brigade of Indian soldiers (known as the Jhansi Brigade) which had alienated itself from the British army. Coming to learn of this the British rushed a force to Hapur on August 27 which on its way expelled the freedom fighters from Kithore, one section under Wilson being ordered to stay at Hapur and to realize the revenue. The Rajputs of Pilkhuwa also rose against the British and murdered two of the messengers sent to the village for the collcetion of the revenue.

About August 23, the Jats (under Lajja Mal, Shah Mal's grandson) again asserted themselves against the British in the Baraut region and attacked a party sent to realize the revenue. The khaki Risala went into action against them in the village of Panchli Buzurg,Nagla and Phupra and wreaked vengcance on them.

On September 10, Walidad khan with 1,000 freedom fighters fro Malagarh advanced towards Meerut. The British force from Hapur met them at Gulaothi (a place about twelve miles from Hapur) and compelled them to retreat. A week later he was joined by the tahsildar of Muradnagar but his forces were dispersed by the British who occupied Muradnagar. The struggle for freedom now came to an and in the district. Nawab Mahmood Ali Khan of Najibabad (district Bijnor). a nephew of Ghulam Qadir, who had joined the freedom fighters of Meerut towards the end of the struggle, was captured and imprisoned in the central jail of Meerut where he died in 1858. By November all resistance to foreign rule in the district had been ruthlessly crushed by the British. That the movement was widespread in character is evident from the fact that, irrespective of caste or credd, persons from all walks of life and from different social strate actively participated in the cause of freedom. It was a "great struggle" and it nearly cost the British their Indian empire".

After the part played by the district in the freedom struggle it become the recipient of special interest and attention from certain social and political leaders. Dayanand Saraswati (the founder of the Arya Samaj movement) visited the city of Meerut in 1878 for preaching the doctrines of the Arya samaj and branch of the Samaj has apparently been in existence in the city since then. Vivekanand, the founder of the Ram Krishna Mission chose Meerut for his stay for a number of months.

Meerut again responded to the call of the leaders to join the national movement against the British yoke. In 1906 the people of Meerut spontancously decided upon using goods made in India in response to a resolution passed by the Indian National Congress at its Calcutta session in that year. In the following year Gopal Krishna Gokhle visited Meerut and the people extended to him a great welcome. He was taken round the city and the cantonment in a coach drawn by the elite of the town, including Hindus and Muslims. The district branch of the Muslim League was established in Meerut in 1909 with about fifty members. Meerut become one of the main centers of the revolutionary movement which had spread over northern Indian under the leadership of Rash Bihari Bose. He had escaped arrest for the attempt to throw a bomb at Lord Hardinge at Delhi on December 27, 1912, and when in hiding visited Meerut a number of times as it was ab big cantonment. It was in this cantonment that Vishnu Ganesh Pingley, one of his chief associates in planning the armed revolt of February, 1915, was arrested, it is said with ten bombs sufficient to blow up a regiment.

In 1919 the entire district expressed its indignation against the enforcement of the Roulette Act. Public demonstrations were organised in the towns and the students of Meerut observed a hartal on April 6, 1919 which was prolonged for two weeks on receipt of the news of the massacre on April 13, at Jalianwallah Bagh, Amritsar. The district authorities enforced section 144 of the Code of Criminal Procedure in the Municipal limits of the city, which banned public meetings. The people, there fore, organized meetings at Suraj Kund (a place outside these limits) which were attended by thousands of people who flocked to listen to the anti government speeches delivered there.

On the occasion of Khilafat Day on October 17, 1919, a complete har tal was observed in the city. The citizens held a public meeting in which they expressed great dissatisfaction against the policy of the British on the Khilafat issue. In March. 1920, the annual session of the Khilafat Conference was also held at Meerut.

The men and women of the district look an active part in the non co-operation movement of 1920-21, In 1921 Mahatma Gandhi visited Meerut. He

was given a rousing reception by the people. more than 50,000 attending the public meeting addressed by him. when several hundred persons were arrested and jailed by the authorities. Congress volunteers responded Ganhiji's call by boycotting forcing cloth and liquor and picketing shops selling such goods. This movement was followed by an agratian agitation known as the no-rent campaign. The peasants refused to pay rent and many were arrested. The authorities took ruthless measures to suppress this revolution.

Lajpat rai (the national deader form the Punjab) came to Meerut city in 1908 to preside over a convention of the Arya Samaj and in 1925 he came to the city again in order to lay the foundation stone of Kumar Ashram, an institution for the uplift of Harijan children.

Four years later the Provincial Political Conference and the Mazdoor and Kisan Sammelan held their respective sessions in the city. The Government prosecuted on March 20 of the same year on charge of sedition about thirty-two persons, including three Europeans, in the court of the district magistrate of Meerut. The case (popularly knownas the Meerut Conspiracy Case) aroused not only all-India but inter national interest. The accused were alleged to have orgainzed youth leagues, labour unions, peasants and workers parties etc. for propagating communistic ideologies, encouraging strikes and agitation among the laborers and peasants. The case was tried by a special judge at Meerut and lasted for four years. Out of the 32 persons placed on trial, 27 were sentenced to rigorous imprisonment and some of them were even trains ported for life. The government spent about Rs 18 lakhs on this trial.

In 1928 the Congress workers of the district organized black flag demonstrations at Meerut against the visit of the Simon Commission. In the following year Mahatma Gandhi again visited Meerut for three days. Thousands of people flocked to hear him and participated in his prayer meetings. He passed through Meerut in 1930 and in that year a branch of the Gandhi Ashram was opened in the city for the production and propagation of khaddar.

Meerut participated enthusiastically in Gandhji's civil disobedience movement of 1930-31. Congress workers manufactured contraband salt in the

heart of the city and several hundred people were sent to jail. More than 1,000 Congress volunteers toured the rural areas of the district and spread the message of salt satyagrah and civil disobedience. At this time the District Congress Committee of Meerut was under the Delhi Pradesh Congress Committee. Abul Kalam Azad, the national leader, come to Meerut on August 28, 1930. He delivered anti-governmental speeches at a mammoth public meeting and demanded that India should be free from foreign bondage. He was arrested on the spot and was sentenced to six months rigorous imprisonment which he underwent in the Meerut district jail. Pyarelal Sharma, the local Congress leader, was also interned there at the same time. In the district. On February 7, 1932, the people of Meerut observed Peshawar Day under the direction of the Congress Committee when several were convicted for their anti-British leanings and for anti-governmental activities. The women of the district also responded by taking active part in the movement by picketing foreign cloth and liquor shops under the leadership of Urmila Devi of Meerut city. The movement continued unabated till May, 1934, when Gandhiji withdrew it.

When the elections for the provincial legislature were conducted in February, 1937, under the Government of India Act. 1935 four seats were allotted to the district of which two were won by the Congress and two by the Muslim League. One member was also elected to the Legislative Council. Pyarelal Sharma become the education minister of the first Congress ministry of the U.P. When the Congress ministry resigned in September, 1930, as it refused to support the government in the war effort unless complete political freedom was assured to India after the war, the people of the district started a campaign against the war fund collections. In 1940 the district authorities imprisoned under the Defence of India Rules forty-six men and a women for obstructing public servants in realizing the war fund. A year later, under Gandhiji's direction, the people started a campaign of offering individual satyagrah in public places after giving prior intimation to the authorities and 327 person including two women were convicted and several hundreds were sumarily tried and sent to the jail in the district.

Meerut reacted to the 'Quit India' resolution of the Bombay session of the Congress held on August 8, 1942, by organzing processions and large-scale

demonstrations to drive it home that the British were not wanted in India. To stop these activities the authorities banned public meetings and processions and on August 9, the district magistrate declared illegal all the Congress organizations in the district.

About 221 men and woman were arrested. Next day the students of the Meerut College loot out a procession which was dispersed by the mounted police, many of the students being injured and twenty-one being sent to jail.

On August 11, about ten thousand people went out in procession in Hapur. The police restored to firing near the town hall killing 5 persons, about 150 being sent to prison. Another 59 were tried for disobeying orders. The district authorities called the army out to control the situation, curfew was imposed and military guards were posted to protect the railway tracks. About 130 persons were arrested for breach of curfew orders. Another police firing look place at mawana on August 12, when 3 persons were killed and about 21 men were seriously injured. The prominent public leaders were kept in custoday in police stations. On August 15, certain women Congress workers defied the prohibitory orders under section 144 of the Code of Criminal Procedure and organized a procession and meeting in the city when some arrests were made. On august 18, in the village of Maniri (tahsil Sardhana) when a peaceful meeting was being held, a sub-inspector of police and his men surrounded the place and fired on the people without any provocation, killing a man wounding several (of whom three died later) and arresting may others.

All the property of the Gandhi Ashram was confiscated and the premises were sealed.

About this time certain anti social elements indulged in sabotage, burnt post-offices, cut telephone and telegraph wires, destroyed railway tracks and indulged in similar activities in order to disrupt the administration. The Congress workers of the district went underground. Schools and colleges were closed for an indefinite period. On August 23, the women of Meerut went out in procession in contravention of orders. Attempts at their dispersal failing. the police arrested sixty-one of them some of whom had their infants with them. In October thousands of students of Meerut. defying the law, took out a huge non-

violent procession which paraded the main streets of the city. ninety-nine persons being arrested and sent to jail.

When a bomb exploded in the office of the controller of military accounts, Meerut destroying many papers, the police arrested twelve persons. Altogether about 248 persons were arrested and 245 convicted during the 1942 movement and the authorities realized a collective fine of Rs 1,67,432 Another bomb was exploded in the precincts of the Meerut civil court. The case known as the Meerut Bomb Case, attracted considerable attention. A number of young men were arrested, five being sentenced to five years rigorous imprisonment each.

The Indian National Congress held its 54th annual session on November 23 and 24, 1946 in Meerut. The site was named Payrelal Nagar in memory of the well known local Congress leader Pyarelal Sharma (who had died in 1942). J. B. Kripalani presided over the session which was attended by many of the national leaders includig Rajendra Prasad, Jawahar Lal Nehru, Vallabhbhai Patel, ABul Kalam Azad and Rafi Ahmad Kidwai. "Meerut still remains a memorable name in Indian History, for it was at Meerut that the independent Soveriegn Republic of India was conceived and for the first time virtually proclaimed."

In the same year, the elections to the Legislative Assembly were held under the Government of India Act of 1935, Two seats from the district went to the Congress and two to the Muslim League. The Congress formed the government in the State. Two members were also elected from the district to the Legislative Council and member was nominated by the governor.

The people of Meerut welcomed the coming of independence on August 15, 1947, In the wake of the partition of the country serious communal riots broke out in the district. On September 7, 1947, Ghaziabad was affected resulting in seven deaths. Three days later the Muslims of the Village of Nahal collected to attack the neigh bouring Hindu village of Chitora. Their attempt was foiled in time by the military petrol police, who arrested 29 persons. Again about the middle of September there were minor affrays in the villages of Mahalka and Rohasa (in police station Daurala) in which two persons died. Thereafter the conflagration died down and conditions returned to normal.

थाना सदर बाजार
जनपद मेरठ

श्री ओ०पी० सिंह

आई.पी.एस.
पुलिस महानिदेशक (उ० प्र०)

आदरणीय पुलिस महानिदेशक महोदय उ०प्र० श्री ओ०पी० सिंह द्वारा दिनांक 03 जुलाई 2018 को थाना सदर बाजार परिसर में अमर शहीद धन सिंह कोतवाल के स्मारक का उद्घाटन किया गया। स्मारक के उद्घाटन के पश्चात् अमर शहीद धन सिंह कोतवाल की प्रतिमा का अनावरण किया गया। प्रतिमा के साथ-साथ अमर शहीद धन सिंह कोतवाल के बारे में एक शिलालेख भी स्थापित किया गया, जिसमें 1857 की जनक्रान्ति में उनके साहसिक बलिदान का उल्लेख किया गया है। हम पुलिस महानिदेशक महोदय के आभारी हैं कि उन्होंने इतिहास के पन्नों में छिपे 1857 की क्रान्ति के खाकी वर्दीधारी हीरो को पुलिस कर्मियों के बीच उदाहरण स्वरूप स्थापित किया। महोदय का यह उल्लेखनीय कार्य चिरकाल तक पुलिस कर्मियों में प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

प्रशान्त कपिल
प्रभारी निरीक्षक
थाना सदर बाजार
जनपद-मेरठ

सतपाल ऑतिल
आई०पी०एस०
सहायक पुलिस अधीक्षक
जनपद मेरठ

राजेश कुमार पाण्डेय
आई०पी०एस०
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक
जनपद मेरठ।